जानकी नारायण श्रीमाली

सरस्वती की गोद में बसी मरु संस्कृति

भारत सृष्टि का आदि राष्ट्र है। राष्ट्र शब्द की अवधारणा मातृरूप में सर्वप्रथम भारत के लिए ही हुई है। भारत की संस्कृति का आधार धर्म रहा है। वेद प्रतिपादित सत्य और सनातन शाश्वत जीवन मूल्यों से अभिप्रेरित इस दिव्य वसुन्धरा के पुत्रों ने अपनी जीवन शक्ति प्रकृति से प्राप्त की है। सौभाग्य से सरस्वती महानदी के रूप में आर्यावर्त को आधारभूत संजीवनी-शक्ति युग-युग में प्राप्त रही। पुण्यशालिनी सरस्वती नदी के तटों पर मानव संस्कृति का प्रथम प्रस्फुटन हुआ। यह प्रस्फुटन विश्व और मानव इतिहास का स्वर्ण विहान था। बीकानेर क्षेत्र परम सौभाग्यशाली है कि यह सरस्वती नदी की गोद में स्थित है। नवीन खोजों में वेदकालीन सुप्रसिद्ध दशराज्ञ युद्ध के विजेता राजा सुदास की राजधानी और भगवान ऋषभदेव की राजधानी कालीबंगा (वर्तमान हनुमानगढ़ जिले) में प्रमाणित मानी जा रही है। कालीबंगा सरस्वती और हृषद्वती नदियों के मध्यस्थित है। यही क्षेत्र प्राचीन चित्रांगल और अर्वाचीन लखी जंगल के नाम से विख्यात रहा है। इस प्रकार मरुभूमि का लाडला बीकानेर क्षेत्र सरस्वती की क्रीड़ा-स्थली रहा है।

सरस्वती के लुप्त होने के स्थान को विनशन कहते हैं। विनशन पर महाभारत काल में बलभद्र जी ने सरस्वती में स्नान किया था। मरुस्थल में विनशन किस जगह स्थित था – इसकी अभी खोज हो रही है। इस प्रकार मरुस्थल सरस्वती की क्रीड़ास्थली के साथ ही विलुप्त होने की स्थली भी है। सरस्वती के पुन: प्रवाह की योजना अब प्रारंभ हो चुकी है।

ऋग्वेद और सरस्वती – वैसे तो समस्त नैतिक साहित्य में सरस्वती का उल्लेख मिलता है किन्तु सरस्वती ऋग्वैदिक युग की सबसे प्रिय और प्रशंसित नदी थी। ऋग्वेद में इसे अंबीतमें, नदीतमे और सिन्धु मातर: कहा गया है। सरस्वती ३२ मंत्रों की अधिष्ठाता देवता है। वेद में उषा के बाद सरस्वती मंत्रों का माधुर्य है। इसे नदी और देवी दोनों रूपों में वर्णित किया गया है। इसे शत्रुनाशिनी और रक्षा करने वाली माना गया है। यह दिव्य और पार्थिव अन्नों को देने वाली है। यह यज्ञ से वर्षा दिलाती है। यहां दूध और घृत की बहुलता थी और खूब पशुधन था। यह सप्त-स्वसा अर्थात सात बहिनों (सहायक नदियों) वाली कही गई है। सरस्वती का जल रत्नों को धारण करने वाला है। यहां के निवासी मित्र-भाव से रहने वाले हैं। यह 'नदीनां शुचि:' है। इसके प्रवाह क्षेत्र में ७ प्रकार की धातुएं पाई जाती थीं। इसकी प्रशस्ति में कहा गया है -

अम्बितमे नदीतमे देवीतमे सरस्वती
अप्रशस्ता इव स्मसि प्रशस्तितम्ब नमरस्कृधि । ऋ: २/४१/१६

लुप्त सरंस्वती – कालान्तर में यह महानदी लुप्त हो गई। अंतिम बार महाभारत में भगवान श्रीकृष्ण के अग्रज बलदेव जी द्वारा सरस्वती की यात्रा का उल्लेख प्राप्त होता है। जनजीवन में गंगा-यमुना-सरस्वती छाई हुई है। किन्तु वह लुप्त है। सरस्वती के तटवर्ती क्षेत्रों में आर्य बसते थे। वहीं पर वेदों के दर्शन हुए। यह भारतीय मान्यता सरस्वती के लुप्त हो जाने से विश्व स्वीकार्य नहीं हो पा रही थी। इस कारण आर्य आक्रमण का पश्चिमी विद्वानों का सिद्धान्त विश्व मान्य हो रहा था। अत: वेद, मनुस्मृति, श्रीमद् भागवत, महाभारत और सभी पुराणों में पाई जाने वाली सरस्वती को धरती पर भी प्रत्यक्ष प्राप्त करने के लिए बाबा साहब आपटे स्मारक समिति नागपुर ने कमर कसी और इस कार्य के लिए वैदिक सरस्वती नदी शोध प्रकल्प, नई दिल्ली की रचना की गई। बाद में इसका कार्यालय जोधपुर कर दिया गया।

सरस्वती शोध - सरस्वती नदी का उद्गम हिमालय पर्वत की शिवालिक पर्वत श्रेणियों में माना जाता है। ये पर्वत श्रेणियां ८ से ५० कि.मी. चौड़ी और १००० मीटर ऊंची है। ये पंजाब से लेकर सिक्किम तक फैली हुई है। इन्हीं पहाड़ियों में अम्बाला

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जिले के सिरमौर क्षेत्र से चार छोटी-छोटी नदियां निकलती हैं। ये वर्षा पर आधारित हैं। इनमें से एक का नाम है। **सुरसती,** अन्य हैं – मार्कण्डा, डांगरी व घग्घर।

घग्घर नदी हरियाणा की वर्षा आधारित सबसे बड़ी नदी है। यह भी शिवालिक से निकलती है। १७५ कि.मी. की यात्रा करके घग्घर रसूला नामक स्थान पर सरस्वती से संगम करती है। आगे इसके प्रवाह को हकरा और नारा भी कहा जाता है। वर्तमान में यह जल शून्य है किन्तु इसका सूखा-प्रवाह-मार्ग इस पूरे क्षेत्र में साफ-साफ दिखाई देता है। विद्वानों का मत है कि यही जल शून्य दिखने वाली घग्घर नदी अतीत की सरस्वती नदी रही होगी। आज भी वर्षा में घग्घर बहती है।

विद्वानों का मत है कि हिमालय के ऊपर उठने के क्रम ने सरस्वती की जीवन रेखा को बाधित किया। उत्तर महाभारत काल में इसमें जलाभाव होने लगा। पुराणकाल में वह ऋतु आधारित लघुरूपधारिणी पूज्य नदी बन गई। धीरे-धीरे वह इतिहास के पृष्ठों में सिमट गई।

भू-उपग्रह अध्ययन - पुरानदी मार्ग के सहीस्वरूप को स्थापित करने में भू उपग्रह छायाचित्रों द्वारा किया गया अध्ययन बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ। इसरो के जोधपुर केन्द्र ने अन्त:सलिला सरस्वती का प्रवाह मार्ग ज्ञात करके उसका वैज्ञानिक स्वरूप चित्र भारत के प्रधानमंत्री और राजस्थान के मुख्यमंत्री को भेंट किया। इस प्रयास से पश्चिमी राजस्थान की जल समस्या के समाधान को नवीन दिशा प्राप्त हुई। इसरो द्वारा प्रकाशित इन मानचित्रों के अध्ययनपूर्वक अधिकारी विद्वानों ने प्रवाह क्षेत्र में १०लाख नलकूप स्थापित होने की संभावना प्रकट की है। इस दिशा में योजनाबद्ध कार्य जारी है जिसे गति देने से मरुस्थल फिर से हराभरा हो जाएगा।

इसरो के इन चित्रों का रणनीतिक भी अद्‌भुत महत्व है किन्तु यहां हम इसकी चर्चा नहीं करेंगे। यहां हम इस पुरानदी मार्ग के मीठे जल की चर्चा करेंगे। राजस्थान के हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर, बीकानेर, बाड़मेर और जैसलमेर जिलों में सरस्वती नदी के दो से ढाई लाख वर्ष पुराने पुरा मार्ग मिले हैं। इन पुरामार्गों के कुओं में मीठा जल मिलता है जब कि मार्ग से दूर होते ही कुओं का पानी खारा मिलता है। सरस्वती के पुरा मार्ग में जगह-जगह झीलों और रणों का निर्माण हुआ। इनमें से एक भारत प्रसिद्ध कपिल सरोवर (जिला बीकानेर) है। ईसा से ३००० वर्ष पूर्व लूणकरनसर और डीडवाना की झीलों में मीठा पानी सागर की भांति लहराता था।

सरस्वती नदी ने मैदानों में अपार मिट्टी बिछाई। आज भी यह मिट्टी खेती का आधार है।

पुरातत्व – सरस्वती नदी के प्रवाह मार्ग में खूब पुरातात्विक उत्खनन हुए हैं। इन खुदाइयों में ४० से २० हजार वर्ष पुरानी मानव सभ्यता का पता लगा है। अब तक २६०० स्थानों पर खुदाई हो चुकी है जिनमें १९२१ में रावी तट पर हड़प्पा और १९३३ में सिन्धु तट पर मोहेनजोदड़ो महत्वपूर्ण हैं किन्तु सरस्वती-हृषद्‌वती के मध्य स्थित कालीबंगा (जिला हनुमानगढ़) अनुपमेय है। बीकानेर संभाग का कालीबंगा सरस्वती सभ्यता का महान केन्द्र है।

मरु संस्कृति – हमारा वर्तमान बीकानेर संभाग (पुरानी बीकानेर रियासत) सरस्वती सभ्यता की हृदयस्थली है। हम इस सभ्यता के सही उत्तराधिकारी हैं। वैदिक संस्कृत काल–राजस्थानी में हळ, खळळ आदि में पाया जाता है। शिव और नांदिया, थूईवाली गौ, गेहूं, जौ, मटर, मतीरा, तिल और खजूर आज भी यहां हैं। ऊंट, घोड़े, खच्चर, हाथी और बिल्ली आज भी हैं। बन्दर, खरगोश, कमेड़ी, तोता आज भी पाले जाते हैं। मिट्टी के बर्तन, धातु और मूर्तियों में ४४०० वर्षों (कालीबंगा की अनुमानित आयु) से एकरूपता विद्यमान है। वैदिक दर्शन और तत्कालीन सामाजिक रीति-रिवाज की आज भी प्रभावी उपस्थिति है।

अनुपम देन – सरस्वती समाज ने विश्व मानवता को – खेती, पशुपालन, नगरीय सभ्यता, वास्तुकला, आभूषण कला और उच्च कोटि की सामाजिक-धार्मिक परम्पराओं का उपहार दिया है। हमें इसके उत्तराधिकारी होने पर गर्व है।

ब्रह्मपुरी चौक, बीकानेर (राज.)

■

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org